Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 03-02-2020; Accepted: 05-03-2020; Published: 14-03-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 14-16

अध्यापक के व्यक्तित्व का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं विषय रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

प्रमिला दुबे [1], निकिता गर्ग [2]

[1] डीन, शिक्षा संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

[2] राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। आकर्षण व्यक्तित्व वाले अध्यापक को छात्रों द्वारा पसंद किया जाता है। शिक्षक के व्यक्तित्व में शिक्षण का तरीका, अंतःक्रिया, विषय ज्ञान, अभीप्रेरित करने की कला आदि बातें शामिल होती हैं। अध्यापक के व्यक्तित्व का विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा विषयों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। शोधकर्ता ने जयपुर शहर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लेकर आंकड़े एकत्रित किए हैं। प्रस्तुत शोध का लाभ विद्यार्थियों को, अध्यापकों को तथा समाज को मिलेगा

मूल शब्द: प्रवासी, भारतवंशी, फीजी हिंदी, गिरमिटिया

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर बताया है विद्यालय रूपी नाव पर सवार होने के लिए शिक्षक रूपी नाविक की आवश्यकता होती है शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी है किसी भी कार्य को करने के लिए यह सफलता प्राप्ति के लिए आंतरिक प्रेरणा तथा उस कार्य में रूचि का होना बहुत आवश्यक है।

शिक्षक ही वह माध्यम है जो छात्रों में अभिप्रेरणा जागृत कर विषय के प्रति रुचि विकसित कर सकते हैं शिक्षक के व्यक्तित्व का छात्रों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है यदि शिक्षक कक्षा-कक्ष में अच्छी शिक्षण विधि का प्रयोग करते हुए छात्रों के स्तर के अनुकूल शिक्षण कराते हैं, तो अधिगम प्रभावी होता है। इससे विद्यार्थियों का अभिप्रेरणा स्तर बढ़ता है अभीप्रेरित विद्यार्थियों में ही संबंधित विषय के प्रति रुचि विकसित होती है।

यदि शिक्षक की विषय पर पूर्ण दक्षता नहीं है तो छात्रों पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। सकारात्मक सोच और आशावादिता अध्यापक के आदर्श व्यक्तित्व के अनिवार्य गुण हैं। छात्र अध्यापकों के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर स्वयं को गुरु के अनुकूल ढाल लेते हैं। पहले शिक्षक का ध्येय भी छात्रों को एक योग्य नागरिक बनाते हुए उसके भविष्य को सवांरना होता था। परंतु वर्तमान में परिस्थिति बिल्कुल अलग है। आज शिक्षक एवं व्यवसायिक शिक्षक बनकर रह गया है, शिक्षक छात्रों पर विद्यालय में ध्यान नहीं देते ना ही उचित ढंग से शिक्षण करवाते हैं। वही शिक्षक यदि कोचिंग या ट्यूशन में

उसी विषय को पढ़ाता है तो बहुत ही अच्छे ढंग से पढ़ाता है। अतः छात्र स्वत: ही कोचिंग की ओर आकर्षित होते हैं। वह विद्यालय से जी चुराने लगते हैं। यदि बालकों को जबरन विद्यालय भेजा जाता है तो वह तनावग्रस्त रहते हैं और उनका मानसिक विकास प्रभावित होता है।

आज शिक्षक अपने व्यक्तित्व की छाप छात्रों पर छोड़ने में असमर्थ हैं। यदि शिक्षक छात्रों को अभीप्रेरित कर सके तथा सकारात्मक सोच विकसित कर सके तो विषय के प्रति रुचि विकसित करके शिक्षण अधिगम को प्रभावी बनाया जा सकता है माध्यमिक स्तर की शिक्षा बालकों के लिए संपूर्ण शिक्षा का अहम हिस्सा है यह बालक ही देश का भविष्य है तथा शिक्षक भाग्य का निर्माता है। जब भाग्य निर्माता शिक्षक ही स्वयं अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होंगे तो कैसे यह छात्रों को अभी प्रेरित कर सकेंगे और कैसे भविष्य के प्रति रुचि विकसित कर सकेंगे ? यह समस्या वर्तमान में विकट समस्या है अतः समस्या की नवीनता, गहनता तथा छात्रों के लिए शिक्षक के व्यक्तित्व का महत्व आदि का ध्यान रखते हुए इस समस्या का चयन किया गया है।

चर :- प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन हेतु निम्न चर सम्मिलित किए गए हैं :-

1. स्वतंत्र चर - अध्यापक का व्यक्तित्व
2. आश्रित चर - विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा विषय रुचि

चरों की कार्यात्मक व व्यवहारिक परिभाषिक शब्दावली

माध्यमिक स्तर - कक्षा 10 तक शिक्षण कार्य करवाने वाले विद्यालय माध्यमिक स्तर के विद्यालयकहलाते हैं।

अध्यापक - विद्यालय में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने वाला व्यक्ति अध्यापक कहलाता है।

व्यक्तित्व - व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अपूर्व समायोजन निर्धारित करती है।

विषय रुचि - यह वह प्रवृत्ति है जो किसी विषय के अनुभव में लग जाती है और उसमें निरंतर होती रहती है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा - उपलब्धि की चाह में प्राणी क्रिया करने के लिए प्रेरित होता है प्रेरणा कार्य को आरंभ करने, जारी रखने तथा नियमित करने की प्रक्रिया है।

उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं विषय रुचि पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर की सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्यापक के व्यक्तित्व से प्रभावित विषय रुचि को ज्ञात करना।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं को प्रभावित करने वाली अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

1. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं की विषय रुचि स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर तथा विषय रुचि स्तर में कोई सार्थक सह-संबंध नहीं पाया जाता है।
3. सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर तथा विषय रुचि स्तर में कोई सार्थक सह-संबंध नहीं पाया जाता है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण निम्न स्त्रोतों से किया गया:-

1. शैक्षिक पत्रिकाएं (नई शिक्षा, संचायिका, भारतीय शोध पत्रिका आदि)
2. वुच का सर्वे
3. जर्नल (टीचर एजुकेशन, इंडियन एजुकेशन आदि)
4. वेबसाइट (शोधगंगा, hdl.handle.net)

अनुसंधान का अभिकल्प

शोध विधि :-प्रस्तुत शोध की समस्या को समझ कर तथा संबंधित साहित्य का अवलोकन कर शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या :- प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर पर

अध्ययनरत जयपुर शहर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया है।

न्यादर्श :- न्यादर्श 100 विद्यार्थियों का लिया है जिसमें 50 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय के तथा 50 विद्यार्थी गैर सरकारी विद्यालय से लिए गए हैं। 50 विद्यार्थियों में 25 छात्र तथा 25 छात्राओं को चुना है।

उपकरण :- शोधकर्त्री ने अपने शोध में दो उपकरणों का प्रयोग किया है :-

1. डॉक्टर बी.पी. भार्गव (आगरा) द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा टेस्ट (ACMT) का प्रयोग किया गया है, यह प्रमापीकृत उपकरण है।
2. विषय अभिरुचि से संबंधित शोधकर्त्री द्वारा स्वयं निर्मित "विषय अभिरुचि अनुसूची"।

वैधता :- प्रमापीकृत उपकरण वैधता प्राप्तांक डॉ. विश्वनाथ मुखर्जी के SCT के प्राप्तांक पर सादृश 0.75 था।

विश्वसनीयता :- परीक्षण-पुन: परीक्षण की विश्वसनीयता 0.87 है समान चरों के उत्तरों की तुलना पर विश्वसनीयता 0.79 है

प्रयुक्त सांख्यिकी: शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध में प्राप्त प्रदत्त के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया है :-

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी-परीक्षण
4. सह-संबंध

व्याख्या : माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालय की छात्राओं व गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं की विषय रुचि स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया इसका कारण हो सकता है, कि सरकारी व निजी विद्यालयों में छात्राओं को जीवन उपयोगी विषय पढ़ाए जाते हैं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर तथा विषय रुचि इस तरह में निम्न सह-संबंध पाया गया निम्न सह-संबंध का कारण हो सकता है कि अध्यापक स्वयं अपने शिक्षण व्यवसाय से संतुष्ट नहीं हो इस कारण वे छात्रों को अभीप्रेरित नहीं कर पाते हों तथा उनके विषय में छात्र कम रुचि रखते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव :- अध्ययन के निष्कर्ष केवल उसी जनसंख्या पर लागू होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन जयपुर शहर तक ही सीमित है। अध्ययन के निष्कर्षों की शुद्धता अवधारणाओं की पूर्ति पर आश्रित रहती है। शोध द्वारा प्राप्त परिणाम विभिन्न प्रकार की समस्याओं को हल करने में सहायक होते हैं। विद्यालयों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा बालकों से यह अपेक्षा है कि सरकारी व गैर सरकारी दोनों ही प्रकार के विद्यालयों का वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए जो बालकों के अंदर अभिप्रेरणा जागृत करें तथा अध्ययन से संबंधित विषय में रुचि विकसित कर सकें ताकि उनका शिक्षण-अधिगम प्रभावी हो।

संदर्भ सूची

1. श्री वास्तव डॉ. डी. एन. वर्मा डॉ. प्रीति, मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 18 वां संस्करण 2007
2. भट्टाचार्य डॉ. जी.सी.,अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, थर्ड संस्करण 2008
3. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका अंक 1 वर्ष 32, जनवरी-जून 2013
4. इंडियन एजुकेशन, मई 2009, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
5. टीचर एजुकेशन, अप्रैल 2006, प्रोफेसर मोहम्मद मियान, दिल्ली, IATE
6. Shodhganga.inlibnet.ac.in
7. http/hdl.handle.net